International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.newresearchjournal.com/education
Volume 1; Issue 3; March 2016; Page No. 22-25

आदर्श महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के स्वरुप पर एक शिक्षा सम्बन्धी विचारः एक अध्ययन

जयन्त कुमार बोरो

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्नमेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम

सारांश
विद्यार्थी जीवन में आदर्श शिक्षा की काफी आवश्यकता रहती है। अच्छे और नैतिक शिक्षा के अभाव एक अच्छा भविष्य तैयार नहीं हो सकता। अच्छे शिक्षा के लिए अच्छे माहौल की भी आवश्यकता होती है। सभी लोगो को आज यह ज्ञात है कि आज की शिक्षा व्यवस्ता कैसी है। शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य कैसे सम्बन्ध है वह भी आज लोगों से छिपा नही हैं। दूनिया के सभी धर्म एकता की बात को सिखता है। अच्छे शिक्षा के लिए शिक्षकों को नैतिकता पर विशेष रुप से बल देने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों की सफलता और असफलता सिर्फ अच्छे अंको पर ही निर्भर नहीं होनी चाहिए। अपितु एक विद्यार्थी को यह विवेक की शक्ति की प्रदान करे की वह अपने जीनव में दलीय नीति से किसी पर विचार न ले।

प्रयुक्त शब्दः आदर्शए शिक्षाए नैतिकताए अंक आदि

प्रस्तावना

विद्यालय, महाविद्यलय और विश्वविद्यालय आदि सभी एक उच्च शिक्षा संस्थान होने के साथ-साथ एक विद्यार्थी के लिए बौद्धिक मंदिर भी है। हम सालो-साल तक अध्ययन करते है कि विगत भविष्य में स्कूल की शिक्षा प्राप्त करते हुये एक अच्छे महाविद्यालय से होते हुये एक अच्छे विश्वविद्यालय में अध्ययन करगें। यह नैतिक सोच हमारी आत्मा को बल प्रदान करता है। अर्थात् हम सालो तक एक अच्छे विश्वविद्यालय में प्रवेश करने की तैयारी में लगे रहते है। लेकिन क्या हमारे यह अच्छे ख्यालात विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के बाद ज्यौं का त्यौं बरकरार रहते है ? यही एक अहम सवाल है जो हमारी शिक्षा व्यवस्था पर सवालिया निशान लगाता है। अक्सर विद्यार्थियों के ख्यालात, उनकी सोच सियासी खेल की वजह से भी बदलते है। आज स्कूलों, कॉलेजों, और विश्वविद्यालय जैसे उच्च संस्थानों में बच्चों और विद्यार्थियों में धर्म की सच्ची तालिम भी दी जानी चाहिए। जिसके बदौलत वे समाज में एक नया पाक-साफ माहौल बना सके। जो नये जामने के लिए वेहद जरुरी है।

उद्देश्य

एक अच्छा शिक्षक ही एक अच्छा समाज और देश बना सकता है। आज के जमाने एक शिक्षक पशेवर शिक्षक है। वह तालिम तो देता है पर सिर्फ इम्तहान में उत्तीर्ण करने लिए। उसकी दी गई तालिम सिर्फ परीक्षा के हॉल में लिखने के भर है। वह सच्चे अर्थों में व्यावहारिक नहीं है। हम भी विश्वविद्यालय देख चुके है। वहाँ रहते वक्त अपने कभी नैतिकता पर, व्यावहारिक जीवन के लिए बुनियादी तालिम पर कभी भी बहस होते नहीं देखा, जबकि यह बेहद जरुरी होती है। प्रस्तुत आलेख के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि विद्यार्थियों को सहिष्णुता की, नैतिकता और धर्म की सच्ची शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि समाज में, देश में नयीं सोच और विचार धारा प्रवाहित हो सके।

आदर्श महाविद्यालय और विश्वविद्यालय का स्वरुप पर एक शिक्षा सम्बन्धी विचार:

'कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यता तु प्रमुच्यते।' [1] – महाभारत, शांति 240.7

अर्थात् कर्म से प्राणी बाँधा जाता है और विद्या से उसका छुटकारा हो जाता है।

गीता में लिखा है कि- ***'बड़ा या समझदार आदमी जो कुछ करता है सब लोग उसी की नकल करते है वह जिस चीज को ठीक करार देता है दूनिया उसी पर चलती है।'*** [2] केवल इमारतों को महाविद्यालय और विश्वविद्यालय नहीं समझा जाना चाहिए, और न ही उपाधि देने वाली एक बड़ी संस्थान। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय का हमेशा से यही उद्देश्य रहा है कि यहाँ आने वाले प्रत्येक विद्यार्थी का व्यक्तित्व विशिष्ट रुप से निर्माण हो सके। अध्यापक, विद्यार्थी और ज्ञान का अर्जन महाविद्यालय और विश्वविद्यालय की आत्मा है। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय बौद्धिक जीवन के पवित्र मंदिर का स्वरुप है, जिसमें किसी भी जाति, वर्ण, समुदाय आदि को महत्व नहीं दिया जाता और न ही कभी दिया जाना चाहिए। ये दोनों शिक्षा के उच्च संस्थान राष्ट्र को एक नयी दिशा देने का कार्य करता है। अध्यापकों के पास इल्म (ज्ञान, विद्या) होता है। इससे वह शक्ति होती है कि लोगो के दिलों और दिमागों को अच्छाई की ओर ले जाये। राजा के पास तलवार की शक्ति है लेकिन अध्यापक के पास इल्म की शक्ति है, इसलिए पाखंडी औप झुठे पंडे, पुरोहित और मुल्ला, पादरी बुरे से बुरे राजाओं से अधिक नुकसान कर सकते है।

वेद में लिखा है- ***विद्या (सांइस) किसी ब्राह्मण (ज्ञानी) के पास गयी और कहने लगी कि मेरी रक्षा करों और मुझे एक पाक (पवित्र) अमानत की तरह बचा कर रखों। मुझे उन लोगो को मत दो जिनके मन में खोह है जिनके दिलो में टेढ़ापन है, जिन्हे अपने उपर काबू नहीं है, जो घमंडी है, जालिम है, लोभी, विलासी है और दूसरो से गैरियट बरतते है, मुझे केवल ऐसे आदमियों को दो जो नेक और पाक है, सबका भला चाहते है और सबके भले के काम करते है मुझे केवल उन्हीं लोगो को दो, तब मेरी शक्ति बढ़ेगी और मैं दूनियाँ का भला कर सकुँगी।*** [3]

गुरुजन ब्राह्मण स्वरुप है जो आज तक हमें पुरी ईमानदारी से प्रेमपूर्वक नेकी का रास्ता अपनाते हुये हम लोगो को ज्ञान देने का कार्य करते आ रहे है। हमने कभी भी यह अनुभव नहीं किया कि हम कुछ भी न सीख सका। लेकिन जितना भी सीखा है उससे कही अधिक सीखने को बाकी है। आशा तो करते है कि कुछ पल उनके सान्निध्य में रह अपने सीमित ज्ञान को विस्तार दे सँकू। हम एक उच्च शिक्षा संस्थान में सिर्फ दो या तीन साल तक ही रह सकते है, उससे अधिक नहीं।

एक विद्यार्थी महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में जब प्रवेश लेता है तो उसके पास सीमित ज्ञान का ही कोष रहता है लेकिन वह उसमे क्षणे-क्षणे विकास करता जाता है। लेकिन शिक्षकों का ध्येय यह होना चाहिए कि उन्हें ऐसा तैयार किया जाये कि वह जीवन में कभी भी कोई भी विचार दलीय नीति से न ले। विद्यार्थी हमेंशा महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में प्रवेश की तैयारी करता रहता है। वह यह तैयारी इसलिए करता है कि ताकि वह अपने आगंतुक जीवन में एक सम्भावित मार्ग को अपना सके। विद्यार्थियो को अपने जीवन में महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के प्रति एक आदर्श भावना को पोषित किये रखना चाहिए। ये ऐसी संस्थायें है जो किसी के व्यक्तित्व के विकास को गढ़ता है। विषय चाहे जो भी हो, लेकिन उसमें नैतिकता का पाठ अवश्य होना चाहिए। नैतिकता कहने का अभिप्राय यही है कि हमारा देश नैतिक मूल्यों को काफी पीछे छोड़ दिया है। आज आप हमारे देश के परिवेश को ही देख लीजिए , सभी क्षेत्रों में नैतिकता का अभाव है। धर्म हो, शिक्षा हो, जातियों में, मानवीय सम्बन्धों में, सामाजिक रिस्तों में, सभी जगहों में टूटता हुआ परिवेश है। हाँ, हमारा राजनैतिक परिवेश काफी गन्दा है, इसमे सुधार की गुन्जाइस काफी कम है। संसद और संविधान ज्ञान देने का काम नहीं करता, और न ही वह कभी करेगे ही। *डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन* जी का कहना है कि- *'we cannot make the people good by the act of parliament'*. हम संसद के अनुछेदों के द्वारा किसी को अच्छा नहीं बना सकते। देखिये कितने सारे कानून और नियम बनाये गये है और बनाये जा भी रहे है, लेकिन किया अपराधों में कमी आयी है ? कानून के नियमों के द्वारा अपराधों की संख्या में कमी नहीं लाया जा सकता। मनुष्य आज नैतिक बन्धनों से मुक्त है, वह खुला विचरण करना चाहता है। उस पर आप कुछ दबाव दालेगें तो वह खोल पड़ेगा। इसलीये आवश्यक है कि नैतिकता से युक्त मनुष्य को तैयार किया जाए। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के शिक्षकों के सान्निध्य में जितने भी विद्यार्थी आते है उनमें नैतिकता की दवा दी जानी चाहिए। जो उसके समस्त शिराओं में बह कर औषोधी का कार्य करे। अपने के गुरुजनों के सान्निध्य में रह कर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय जो कुछ भी सीखा है उसे नेक दिल से बाटने का काम करना चाहिए। आज समय का तेवर अलग है, हम पुराने तरीको को अख्तियार कर नये लोगो नहीं समझा सकते। हाँ, लेकिन पुराने तरीक हमारे सभ्यता का प्रमाण है। हमारी सभ्यता के विकास में हमने जो-जो अच्छे मूल्यों को अपनाया था उसकी आवश्यकता तो होगी। लेकिन जिन तत्वों के कारण हमारी समाजिक संगठन पर बुरा असर पड़ा है उसे बाहर निकालना होगा। एक नये सिरे से नये विकास की आवश्यकता है। हम आज जितने भी नये क्यों न हो ? प्राचीन सभ्यता का प्रभाव हमारे उपर है, जीवन के प्रत्येक मोढ़ पर कुछ न कुछ नवीन ज्ञान का अन्वेषण होता है। हमें उन प्राप्त ज्ञान को सामुहिक हित में लगा देना चाहिए। संसार में परिवर्तन आवश्यक है, परम्पराओं में भी परिवर्तन होता रहता है। प्राचीन परम्परायें जिन तत्वों को लेकर आगे बड़ा, समय के गर्त में उसमे भी बदलाव आता गया। परम्परा बदलेगा क्योंकि वह एक विकसित मूल्य है, अगर परम्परा का बहाव में परिवर्तन होता है तो विकास भी आवश्यक है, लेकिन हमारे पास विकास के नाम पर किया है, विकास सिर्फ मुद्दों का नाम नहीं है। विकास आवश्यक है वह भी पुरे प्रकृत रुप में। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में आने वाले विद्यार्थियों से यहीं उम्मीद की जाती है कि विचारों में परिवर्तन करे और उसमें वैज्ञानिक विचार धाराओं को स्थान दे।

आदर्श महाविद्यालय और विश्वविद्यालय का स्वरुप के रुप में हमें एक ऐसा माहौल तैयार करना है जिसके अन्तर्गत विद्यार्थियों का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। विद्यार्थियों के मध्य सामुहिक सद्भावना की वृद्धि करे का प्रयास अति महत्वपूर्ण है। यही सद्भावना नैतिकता का काम करेगा, जो उनके जीवन में शिक्षा के साथ साथ अतिरिक्त योग्यता का काम करेगा। सही मायने में जब तक एक विद्यार्थी किसी भी शिक्षा संस्थान के प्रति आदर्श भावना को जन्म नहीं देगा, तब तक उस विद्यार्थी में पूर्ण विकास को देख पाना असम्भव है। सुख की कामना की इच्छा से विद्या की कामना नहीं किया जा सकता, अपितु विद्या के अर्जन में सुख तनिक भी नहीं है। विद्या एक योग है, योग साधना के बल ही सफल होता है। गुरुजनों का आवश्यक कर्तव्य है कि वे विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण में सहयोग प्रदान करेगे। संत कवि तिरुवल्लुर ने कहा था कि- ***"नदी या झील या तालाब की गहराई कितनी ही क्यो न हो और उसका पानी कैसा भी क्यों न हो, कमलिनी खिले बिना नहीं रह सकती। इसी तरह, अगर किसी लक्ष्य तक पहुँचने का पक्का इरादा कर लिया जाये, तो चाहे वह कितना ही असम्भव क्यों न हो, इंसान उसे हासिल कर ही लेता है।"*** [4]

ऐसे महान विचारों को लेकरके हमें अपने जीवन के गति को आगे बढ़ाना चाहिए। एसे विचार विद्यार्थियों के मध्य अदम्य साहस का कार्य करेगा। जीवन में विचारों का होना आवश्यक है क्योकि अच्छे विचार चिन्ता कम चिन्तन का संचार करता है। जीवन में चिन्ता की अपेक्षाकृत चिन्तन की आवश्यकता है। चिन्ता मनुष्यों को पीछे छोड़ देता हैं लेकिन चिन्तन मनुष्यों को आगे बढ़ा कर लिये चलता है। विद्यार्थियों में चिन्तन की प्रवृति को विकसित करना प्रत्येक शिक्षक का प्रमुख ध्येय होना चाहिए।

21वीं सदीं के वैज्ञानिक संत *डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम* के शब्दों में कि आप अपने देश को क्या देना चाहेगे और आप किस रुप में याद रखे जाये ? कलाम जी को देश किस रुप में याद रखेगे यह कहने की आवश्यकता नहीं है लेकिन उन्होने कहाँ है कि – ***"किस रुप में याद रखे जाने की आपकी आकांक्षा है ? आपको अपने को विकसित करना होगा और जीवन को एक आकार देना होगा। अपनी आकांक्षा को अपने सपने को, एक पृष्ठ पर शब्दबद्ध कीजिए। यह मानव इतिहास का एक बहुत महत्वपूर्ण पृष्ठ हो सकता है। राष्ट्र के इतिहास में एक नया पृष्ठ जोड़ने के लिए आपको याद रखा जाएगा। भले वद पृष्ठ ज्ञान-विज्ञान का हो, परिवर्तन का, या खोज का हो, या फिर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का।"*** [5] कलाम जी के ये शब्द विद्यार्थियों एवं अध्येताओं के लिए प्रेरणा का स्वरुप है और कर्मपथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा जगाने के साथ उर्जा का भी संचार करते है। शिक्षा संस्थानों में आने वाले प्रत्येक विद्यार्थियों में जिज्ञासा की प्रवृति को जगाया जाना चाहिए। क्योंकि यही जिज्ञासा उसे जीवन में ले जाएगा। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय से प्राप्त ज्ञान को वहाँ से निकलने के पश्चात् किस रुप में वे अपने जीवन में प्रयोग या व्यवहार में लाये इसका भी उचित ज्ञान उन्हें दिया जाना चाहिए। क्योंकि उनके आगामी जीवन में सदैव शिक्षक साथ में नहीं रहेगे कि उन्हें बार-बार उपदेश दिया जाता रहे। एक उदाहरण गीता से लेना आवश्यक समझता हू। कि- ***"महाभारत की लड़ाई समाप्त होने पर एक दिन श्रीकृष्ण और अर्जुन प्रेमपूर्वक बातचीत कर रहे थे। उस दिन अर्जुन के मन में इच्छा हुई कि श्रीकृष्ण से एक बार फिर गीता सुने। तुरन्त अर्जुन विनती की " महाराज ! आपने जो उपदेश मुझे युद्ध के आरम्भ में दिया था, उसे मैं भूल गया हूँ। कृपा करके फिर एक बार उसे बताइये।" तब श्रीकृष्ण भगवान् ने उत्तर दिया , "उस समय मैंने अत्यन्त योगयुक्त अन्तःकरण से उपदेश किया था। अब सम्भव नहीं कि मैं वैसे ही उपदेश फिर कर सकूँ।"*** [6]

सुकरात ने भी शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति स्वीकार किया है। सुकरात की दृष्टि में जीवन का उद्देश्य भद्र आचरण करना है। भद्र आचरण तब तक सम्भव नहीं है जब तक ज्ञान न हो, अतः ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इसीलिए शिक्षिक को बच्चों को सोचने-, समझने की शक्ति प्रदान करे। शिक्षा असल में व्यावहारिक

होने चाहिए। संत कबीर की दी गई शिक्षा को व्यावहारिक की कसौटी में उतार कर देख सकते है। वे कहते है-

'मसि कागद छूयों नहीं, कलम गह्यों नहिं हाथ।' [7]

कमेनियस [8] भी व्यावहारिक शिक्षा पर विचार करते हुये कहते है कि – *"Whatever is taught should be taught as being of practical application in everyday life and of the some define use. That is to say, the pupil understand that what he learns is not taken out of some Utopia or borrowed from Platonic Ideas, but is one of the facts which surrounded us, and that a fitting acquaintance with it will be of great service in life. In this way his energy and his accuracy will be increased."* [9]

प्राचीन हो या आधुनिक विचारक दोनो ही लोगों ने अच्छे शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण बताने का प्रयास कहते है कि –

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि कोढै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहार बाहै चोट।। [10]

अर्थात् गुरु कुम्हार है, और शिष्य घड़ा है, भीतर से हाथ का सहारा देकर, बाहर से चोट मार-मार कर और गढ़-गढ़ कर शिष्य की बुराई को गुरु निकालते हैं।

बेस्टोलोजी का कथन है कि – ***'सात साल तक कोई बच्चा मेरी निगरानी में रहे, फिर भगवान हो या शैतान, कोई उसमें परिवर्तन नहीं ला सकता।'*** [11]

उपर्युक्त दोनों मतों को डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णान् के मत देवारा स्पष्ट किया जा सकता है कि- ***'हम जैसा समाज बनाना चाहते हैं हमें वैसी शिक्षा देनी चाहिए। हम चाहते है कि हमारा आधुनिक लोकतंत्र मानवीय गरिमा और गुणों पर आधारित एक सक्रिय लोकतंत्र हो। फिलहाल तो ये बातें महज आदर्श हैं किन्तु हमें इन्हें साकार करना चाहिए।'*** [12]

यह कहाँ जा सकता है कि एक अच्छे परिवार, समाज राष्ट्र को सुदृद्ढ़ बनाने के लिए शिक्षक की भूमिका को नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता। एक शिक्षक की सक्रिय भूमिका से अच्छे लोगों को तैयार किया जा सकता है। धर्म को हमारे समाज और सभ्यता के लिए बाधक नहीं बनने देना चाहिए। धर्मा को सभी समुदायों के विकास का मार्ग बनाये जाने की कौशिश करनी चाहिए। यूरोपियन विद्वान् जे.ई. कारपेन्टर ने अपनी किताब **'दि प्लेस आफ़ दि क्रिश्चयानिटी अमंग दि रिलिजन्स आफ़ दि वर्ल्ड'** में लिखा है कि – ***'व्यापार का उद्देश्य यह है कि धरती की सब पैदावार को इस तरह संगठित किया जावे कि सारे मानव समाज की सब जरुरतें पूरी हो सके। साइन्स का उद्देश्य यह है कि सब चीजों की सच्ची जानकारी सब में फैल जावे। राजनीति का उद्देश्य यह है कि सब देश न्याय और शान्ति के साथ मिलकर प्रेम से रह सकें, और सबकी बराबर उन्नति हो। इसी तरह धर्म का उद्देश्य यह है कि सबके अन्दर एक सच्चा विश्वास हो।'*** [13]

उपसंहार:

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कह सकते है कि समाज में नैतिक आदर्श की आवश्यकता है। समाज में नवीन ज्ञान, नयी सोच के स्थापना के लिए शिक्षा के माहौल को भी बदलना अनिवार्य है। इसके लिए शिक्षिक अपनी भूमिका का निर्वाह करे। अंक के आधार पर विद्यार्थियों को सफलता और असफलता की कसौटी नहीं उतारा जाना चाहिए। बल्कि उसका ज्ञान और उसकी बौद्धिक क्षमता हमारे किस काम आ सकती है उसका आंकलन किया जाना चाहिए। महाविद्यालय और विश्विद्यालय को यह ध्यान रखना चाहिए की सिर्फ अंक पर ही ध्यान न हो बल्कि वह अच्छा व्यक्ति भी बने।

पादटीका:

1. लोकमान्य बालगंगाधर तिलक द्वारा रचित श्रीमद्भगवतगीता रहस्य के दँसवे प्रकरण के कर्मविपाक और आत्मस्वातंत्र्य से उद्धृत, तिलक, लो. बाल गंगाधर, लेखक, श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य, (अनुवादक-श्री माधवराव सप्रे), पृष्ठ संख्या- 249.
2. सभी धर्मो की बुदियादी एकता दास, डॉ. भगवान, लेखक, , पृष्ठ संख्या- 437.
3. वहीं, पृष्ठ संख्या- 438.
4. कलाम,डॉ. ए. पी. जे अब्दुल, लेखक, अदम्य साहस, पृष्ठ संख्या- 349
5. वहीं,
6. तिलक, लो. बाल गंगाधर, लेखक, श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य, (अनुवादक-श्री माधवराव सप्रे),
7. कबीर वाणी, संकलनकर्ता एवं अनुवादककर्ता, कबीर पन्थ का एख सेवक, प्रकाशक- रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार।
8. केमिनियस का जन्म सन् 1592 ई. में मोरेविया (Moravia) के एक गाँव निवनिज में हुआ था। उसका प्रारम्भ का नाम कोमेन्स्की था, किन्तु बाद में उसके नाम में बहुत थोड़ा-सा परिवर्तन हो गया और उसका नाम पड़ा- जॉन एमस कमिनियस। केमिनयस जिस सम्प्रदाय में पैदा हुआ था, उस सम्प्रदाय के लोग बड़े ही प्रगतिशील विचारों के थे। पाण्डेय, डॉ. रामशकल, लेखक, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा-शास्त्री, पृष्ठ संख्या- 35
9. जो कुछ भी पड़ा जाय वह दैनिक जीनव की व्यावहारिक एंव निश्चित उपयोगिता को ध्यान में रखकर ही पढ़ाया जाय। कहने का तात्पर्य यह है कि बालक को यह समझाना चाहिए कि जो कुछ वह सीख रहा है वह प्लेटों के प्रत्ययों की दुनिया की चीज अथवा काल्पनिक वस्तु नहीं है वरन् वह हमारे वातावरण का तथ्य है और उस तथ्य से उसका परिचय जीवन के लिए बड़ा उपयोगी होगा। इस प्रकार उसकी शक्ति में वृद्धि की जी सकती है। वही, पृष्ठ संख्या- 39.
10. कबीर वाणी, संकलनकर्ता एवं अनुवादककर्ता, कबीर पन्थ का एख सेवक, प्रकाशक- रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार, पृष्ठ संख्या-2.
11. कलाम, डॉ. ए. पी. जे अब्दुल, लेखक, शिक्षा का उद्देश्य (अदम्य साहस), पृष्ठ संख्या- 47.
12. वही, पृष्ठ संख्या-53.
13. *तालीम का चौथा आर*- सभी धर्मो की बुदियादी एकता दास, डॉ. भगवान, लेखक, पृष्ठ संख्या- 425.

सन्दर्भ ग्रंथ:

1. कलाम, डॉ. ए.पी.जे अब्दुल, लेखक, अदम्य साहस, (अनुवादक-ओ.पी.झा), प्रकाशक-राजपाल एण्ड सन्ज़, कशमीरी गेट, दिल्ली-06.
2. तिलक, लो. बाल गंगाधर, लेखक, श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य, (अनुवादक-श्री माधवराव सप्रे), प्रकाशक- न्यू साधना पॉकेट बुक्स, 70, रोशनआरा प्लाजा,रोशनआरा रोड, दिल्ली-07.
3. दास, डॉ. भगवान, लेखक, सभी धर्मो की बुदियादी एकता, प्रकाशक- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणासी- 01.

4. पाण्डेय, डॉ. रामशकल, लेखक, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा-शास्त्री, संस्करण-1990, प्रकाशक- विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।A